भजन

मेरे सतगुरू मेहरां वाले ने
सरी दुनियां तो दिसदे निराले ने

1) धाम धनी ही सतगुरु बन के मेरे कारण आये
झूठे बंधन तोड़ के मैंनू धाम लजावण आये
जिल्थे नूर ही नूर दे उजाले ने मेरे सतगुरु.

2) सच्चे सतगुरू दी सोहोबत ने, पूरण ब्रह्म मिलाया
भरमां वाला की पहचाणें, कौन स्वरूप ए आया
समझणगे समझण वाले ने मेरे सतगुरू..

3.) फिरके मजहब धरम पंथ दे सारे भेद मिटाये
धाम धनी दी ओट मिली तां, कायम सुख नूं पाये
खुले द्वार मारफत वाल ने मेरे सतगुरू..